पौल–तिमोथी पाठ्यक्रम विषय सूची (A0m)

3. **कलीसियाएं स्थापित करनाः** नये समूह व झुण्ड आरम्भ करना, प्रभु के सेवकों का आदर सत्कार करना।
   घरों में तथा विशाल–समूहों में आराधना H6a
   पापियों को यीशु से भेंट करने के लिए एकत्रित करना S5a
   नई कलीसियाएं व प्रार्थना समूह आरम्भ करना C7a

4. **शिष्य बनाना :** यीशु की आज्ञापालन
   यीशु की आज्ञानुसार ही पतरस ने शिष्य बनाए। D3
   अपने महान राजा यीशु की आज्ञापालन करना F3
   माता–पिता अपने बच्चों को शिक्षा दें C3

5. **सुसमाचार–प्रचार, पापों से उद्धार, स्वर्ग व नरकः यीशु की गवाही देना प्रश्चात्ताप करना, विश्वास करना, नया जन्म पाना, बपतिस्मा लेना।**
   सुसमाचार फैलाना M2
   प्रश्चात्ताप करना और नया हृदय पाना R3
   पवित्रात्मा की सामर्थ से यीशु की साक्षी देना P5
   यीशु में नया, अनन्त व पवित्र जीवन S1
   परिवार व मित्रों का यीशु के विषय सुनने को एकत्रित होना W1
   संसार में पाप का प्रवेश S4

6. **दान :** दान देना सीखना, समय का सदुपयोग, आत्मनिर्भरता
   प्रभु की सेवा के लिये तथा आवश्यकताग्रस्त लोगों को देना G1
   आत्मनिर्भरता, स्वयं–रोज़गार, तम्बू बनाने वाले V3
   भंडारीपन, जो उत्तरदायित्व प्रभु ने सौंपा है विश्वासयोग्यतापूर्वक करना S3

7. **प्रभु में बढ़ना** : चरित्र–निर्माण तथा परिवर्तन
   पवित्रात्मा से परिपूर्ण जीवन H5
   आत्मिक परिवर्तन तथा धार्मिक जीवन C1
   परमेश्वर के जनों को नया बनाना R2

8. **महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाएं :** ऐतिहासिक सुसमाचार संदेश, कलीसियाई इतिहास
   यीशु अद्भुद रूप से मानवीय रूप में जन्मा C3
   यीशु का जीवन–दायक मृत्कोत्थान E1
   मसीही धर्म का इतिहास भाग १, प्रथम ४०० वर्ष H4-1
   मसीही धर्म का इतिहास भाग २, सन् ४०० से १६०० वर्ष तक H4-2
   मसीही धर्म का इतिहास भाग ३, सन् १६०० से आज तक H4-3

9. **प्रेमः** आवश्यताग्रस्तों की सेवा करना, एकतापूर्वक कार्य करना, पारिवारिक जीवन, कलीसिया में परस्पर सहभागिता
   दूसरों की सहायता करके प्रेम दिखाना L4
   पारिवारिक जीवन, विवाह, बच्चों को प्रशिक्षित करना F2
   आवश्यकताग्रस्तों की सेवा करना D1
   कलीसियाएं व छोटे समूह एक दूसरे की सेवा करें I1
   व्यवहारिक रूप से प्रेम दिखाना C4

10. **सेवकाई** :अन्य संस्कृतियां तथा निरस्कृत लोग, प्रेरितिक दल, अनुसंधान, योजनाएं, सेवा–दर्शन
    अन्य संस्कृतियों में पहचान करना कि फसल तैयार है R5
    तिरस्कृत स्थानों में दलों का जाना T2
    अन्य संस्कृतियों के साथ कार्य करना T4
    उपेक्षित लोगों में मिशनरी भेजना S2
    विस्तश्त सेवकाई का दर्शन रखना V1

11. **आयोजन तथा अगुवाई करनाः** एक दूसरे की सेवा, दूसरे झुण्ड की सहायता, अनुशासन, झुण्ड की देखभाल
    प्रेम से एक दूसरे की सेवा करना C5
    अतिरिक्त : परमेश्वर के परिवार में एक दूसरे की सेवा C5
    एक दूसरे की सेवा के लिये छोटे समूह बनाना L1
    लाभदायक नियम व अनुशासन रखना C6
    एक दूसरे की सेवा के लिए झुण्ड बनाना O1
    नई कलीसियाओं के लिये क्षेत्रिय निरीक्षक R1
    परमेश्वरीय वरदानों द्वारा सेवा करना S6
    और : आत्मिक वरदानों की समझ S6
    चरवाहे संबंधी कर्तव्य निभाना P1
    और : परमेश्वर निरीक्षक देता है P1
    उपेक्षित लोगों में मिशनरी भेजना S2

12. **प्रार्थना तथा विश्वास** : कार्यरूप में विश्वास, चंगाई, निवेदन, आत्मिक संग्राम, पारिवारिक प्रार्थना
    प्रभावपूर्ण विश्वास के साथ प्रार्थना करना P6
    यीशु के नाम में चंगाई H2
    अब्राहम के समान कर्म सहित विश्वास करना Fla
    सताव सहना P3
    यीशु के नाम में शैतान से स्वतन्त्रता D2

13. **बाईबल आधारित शिक्षा देना** : यीशु के समान शिक्षा देना, कहानियों का प्रयोग करना तथा विचार–विमर्श करना।
    प्रभु परमेश्वर कैसा है, कहानियों द्वारा समझाना S7
    बच्चों को सिखाना कि जैसा परमेश्वर ने कहा वैसा पालन करना T1
    पिता, पुत्र एवं पवित्रात्मा एक हैं T5
    परमेश्वर को जानने में मूसा ने लोगों की सहायता की D4
    आराधना समय में विश्वासियों को सिखाएं P7

14. **अगुवों का प्रशिक्षण** : यीशु एवं प्रेरितों के समान नये अगुवों का प्रशिक्षित करना,
    अक्विल्ला और प्रस्किल्ला ने नए अगुवों को सिखाया M1
    पौलुस के समान नये चरवाहों को सिखाना E2
    यीशु व पौलुस समान अगुवे तैयार करना T3
    अधिक जानकारीः आज्ञापालन के साथ प्रशिक्षण (४८ पृष्ठ) T3

15. **आराधनाः** प्रभुभोज विधि मनाना, आत्मा में आराधना करना, विशेष–दिवस मनाना प्रभु यीशु का जन्म व पुनरूत्थान मनाना, देखें ऐतिहासिक घटनाएं–८,
    प्रभु की मेज़ L3
    अधिक जानकारी : अपने छोटे झुण्ड में प्रभुभोज मनाना L3
    हारून एवं अन्य आराधना–अगुवे W2
    धन्यवाद के साथ कटनी व आशीषों का आनन्द मनाना H1